P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-12* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

जौनसार बावर जनजातीय समुदाय खाद्यान्न व आर्थिक सुरक्षा

(Augmenting Food and Economic Security of Trivel Community)

शान्ति सिंह
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
हेमवती नंदन बहुगुना
विश्वविद्यालय, एस. आर. टी.
परिसर, टिहरी, गढ़वाल,
उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

जौनसार–बावर जनजातीय समुदाय भौगोलिक स्वरूप से उत्तराखण्ड राज्य के देहरादून जनपद के उत्तर पश्चिम भाग में उपस्थित है । जनजातीय घाटी क्षेत्र उच्चावच में अवस्थित हैं। जनजातिय घाटी क्षेत्र उच्चावच दृष्टि से कृषि भूमि बहुत ही कम है। अतः फिर भी यहां के मूल निवासी की आजीविका पद्धति कृषि पर निर्भर है जनजातीय समुदाय परम्परागत पद्धति से कृषि व्यवसाय करते है। यह लोग कृषि कार्य के साथ– साथ व्यापार करने की सूझ बूझ रखने की क्षमता भी रखते है। इस कारण व्यापार के माध्यम से भी कुछ धन प्राप्त होता था इस क्षेत्र में कृषि के साथ– साथ पशुपालन भी किया जाता है। मानसूनी वर्षा पर आधारित नगदी फसल कृषि व्यवसाय कार्य किया जाता है। लेकिन समय के साथ –साथ जलवायु परिवर्तन से मानसूनी वर्षा सही समय पर न होने के कारण उनकी आर्थिक पर संकट आ गया है।

मुख्य शब्द : सतत विकास, प्राकृतिक संसाधन, प्रबंधन, खाद्यान व सुरक्षा, वर्तमान आजीविका पद्धति।

प्रस्तावना

जौनसार– बाबर भौगोलिक दृष्टि से उत्तराखण्ड राज्य के जनपद देहरादून के उत्तर–पश्चिम भाग में अवस्थित है। जिसका भौगोलिक विस्तार 30^0 उतरी अंक्षाश से 30^0 डिग्री उतरी अंक्षाश तक तथा पूरब पश्चिम विस्तार $77^0.38'$ पूर्वी देशान्तर 78^0 4' पूर्वी देशान्तर तक फैला हुआ है। जौनसार– बावर जनजातीय क्षेत्र देहरादून जनपद के चकराता व कालसी विकास खण्डों मे 1000. 07 वर्ग कि.मी. मे यमुना व ठोस नदियों के बीच फैला हुआ है यह क्षेत्र उत्तर मे जनपद उत्तरकाशी रवाई घाटी के पूर्व में टिहरी गढ़वाल के जौनपुर क्षेत्र से पश्चिमीं मे हिमालय प्रदेश बुशहर सिरमोर जनपद और दक्षिण में दून घाटी से घिरा हुआ है। यमुना नदी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है। जो इसे देहरादून परगने से अलग करती है। जौनसार– बावर कोई जाति नही बल्कि उपजाति का एक समूह है विशिष्ट रीति रिवाज वाले इस मानव समूह के कारण हो इस क्षेत्र को अनुसूचित जनजाति सावैधानिक दर्जा दिया गया है।

विधि तंत्र

प्रस्तुत शोध पत्र में आंकडों का संगलन प्राथमिक व द्वितीय स्त्रोतों के माध्यम से किया गया है द्वितीय आंकडों का संकलन शोध पत्र समाचार पत्र पत्रिका आदि से किया गया है।

प्राथमिक आंकडों का संकलन

जौनसार

बाबर जनजातीय क्षेत्र से चार गांव प्रतिदर्श के रूप में लिये गये है एक गांव की घाटी के शीर्ष से तथा दूसरों गांव घाटी के मध्य भाग से लिया गया है। प्रत्येक गांव से हम उत्तर दाताओं का चुनाव देव निर्देशन विधि के माध्यम से किया गया है। तथा उनका साक्षात्कार लिया गया है। प्राथमिक आकडों का संग्रहण साक्षात्कार प्रश्नावली अवलोकन फोकस ग्रुप डिस्कशन के माध्यम से आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. सतत विकास, प्राकृतिक संसाधन के प्रबन्धन के माध्यम से जौनसार– बावर की खाद्यान्न व आर्थिक सुरक्षा।
2. जौनसार– बाबर जनजाति की वर्तमान आजीविका का पद्धति ।

व्यापार व्यवसाय एंव बागवानी कृषि जौनसार–बाबर पर्वतीय क्षेत्रों में ग्रामीणों अधिवास भौगोलिक दृष्टि से व्यापार व्यवसाय,एंव बागवानी कृषि के माध्यम से खाद्यान्न व आर्थिक सुरक्षा वह आजिविका पद्धति पर निर्मित है। अपनी परम्पराओं व संस्कृति की दृष्टि से जनजातिय क्षेत्र समृद्व होती है प्रारम्भ से ही यह लोग भेड बकरियों व सेब ,राजमा, अखरोट, खुमानी आदि फलों का उत्पादन प्रचुर मात्रा मे करते है इस क्षेत्र का सबसें लोक प्रिय फल सेब है।

सेब अखरोट, खुमानी

आर्थिक ऊँचाई वाले खुमानी आदि फलों मे सेब, अखरोट खुमानी आदि का प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है। यहां का सबसे लोकप्रिय फल सेब है। तथा सेब को बेचकर ये लोग अपनी आजीविका चलाते हैं। खुमानी व अखरोट को भ यह लोग विक्रय करते है। खुमानी अन्दर की हड्डी (बीज) को फोड़ कर जो विकलता है उसे पहाडी बादाम कहते है। इसमें तेल भी निकाला जाता है जो चूली के तेल के नाम से जाना जाता है।

तालिका–1
सेब का उत्पादन

गांव	उत्पादन	आय के रूप में
रजाणु	20 किलो	12,000
कोरूबा	05 किलो	500
हटाल	40 किलो	20,000
बुल्हाड	50 किलो	25,000

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सबसे ज्यादा सेब उत्पादन बुल्लाड गॉव से 50 किलो प्रति परिवार हयू लमे 40 किलो प्रति परिवार रजाक से 20 किलो प्रति परिवार व कोरबा से 5 किलो प्रति परिवार सेब उत्पादन किया जाता है।

राजमा

जौनसार जनजातियों की प्रमुख नगदी फसल राजमा का उपयोग दाल के रूप में किया जाता है। यह अत्यधिक स्वादिष्ट व कीमती है।

तालिका –2
राजमा उत्पादन

गांव	उत्पादन	आय के रूप में
रजाणु	20 किलो	30,00
कोरूबा	2 कुन्तल	30,000
हटाल	1 कुन्तल	15,000
बुल्लहाड	50 किलो	7,500

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है। कि सबसे अधिक राजमा का उत्पादन कोरूबा में प्रति परिवार 2 कुंतल व हटाल मे 1 कुंतल व बुल्हाड मे 50 किलो प्रति परिवार तथा सबसे कम रजाणु 20 किलो का उत्पादन होता है।

आलू

आलू इस क्षेत्र की प्रमुख नगदी फसल है। आलू का लोग वर्ष भर सब्जी के रूप में उपयोग करते है। आलू के खेत में मिश्रित फसल बोते है। जब आलू के पेड़ गल जाते है। तो राजमा आदि फसल आलू के साथ ही एक ही खेत में उगाते है। दोनों फसलें नगदी फसल है।

तालिका –3
आलू उत्पादन

गांव	उत्पादन	अपना उपयोग	आय के रूप में
रजाणु गोरूछा	8 कुन्तल	1 कुन्तल	7000
कोरूबा	20 कुन्तल	2 कुन्तल	18000
हटाल	30 कुन्तल प्रति व्यक्ति	2 कुन्तल	28000
बुल्हाड	15 कुन्तल 1 परिवार	2 कुन्तल	13000

सबसे ज्यादा आलू का उत्पादन हटाल में 30 कुन्तल प्रति परिवार होता है। तथा कोरूबा व बुल्लाह में 20 व 15 कुन्तल प्रति परिवार होता है सबसे कम रजाणु मे 08 कुन्तल प्रति होता है।

चौलाई

अधिक ऊंचाई पर होने वाली फसलों मे प्रमुख फसल है। यह एक परम्परागत व नगदी फसल है। इस फसल की बाजार में बहुत अधिक मांग है इस का प्रयोग गांव के लोग लड्डू, रोटी बनाने के लिये करते है। इसकी रोटी मोटी व पौष्टिक व गर्मी प्रदान करने वाली होती है तथा इसके दाने बारिक होते है। इसको गर्म कर खाते भी है। देवताओं को प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है। इसे फलाहारों के रूप में माना जाता है विशेष कर भगवान शिव के ब्रत के समय इसे प्रसाद के रूप में प्रयोग करते है।

तालिका –4
चौलाई का उत्पादन

गांव	उत्पादन	आय के रूप में
रजाणु	4 कुन्तल	12,000
कोरूबा	2 कुन्तल	6000
हटाल	25 किलो प्रति परिवार	7500
बुल्लहाड	3 कुन्तल	9000

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि सबसे ज्यादा चौलाई का उत्पादन रजाणु मे होता है 4 कुन्तल प्रति परिवार बुल्लाह मे 3 कुन्तल परिवार कोरूबा में 2 कुन्तल तथा सबसे कम उत्पादन हटाल मे 25 किलो प्रति परिवार होता है।

ककराव

ककराव एक पेड़ पर लगने वाले सेम या फल है जो स्थानीय स्तर पर आयुवैदिक दवाई के रू॰ मे इस्तेमाल होता है यह दमा, सॉस आदि की बीमारियों को दूर करने के लिये रामबाण का काम करती है। इसका व्यापार भी स्थानीय स्तर एवं दूरवर्ती क्षेत्रों मे किया जाता है यह मूल्यावान औषधि है।

सारणी–5
ककराव का व्यवसाय संगलन लोग

गांव	सदस्यों की संख्या		कुल योग	आय के रूप में	प्रतिशत
	हाँ	नही			
रजाणु	08	02	10	15000	
कोरूबा	05	05	10	7500	
हटाल	06	04	10	5000	
बुल्हाड	06	04	10	10,000	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि सबसे ज्यादा ककराव का व्यवसाय रजाणु गांव में 10 परिवार में से 8 परिवार ककराव का व्यवसाय करते है। अटाल व बुल्लहाड 10 में 6 परिवार ककराव का व्यवसाय करते है तथा कोरूबा मे 10 में से 5 परिवार ककराव का व्यवसाय करते है। प्रति वर्ष प्रति परिवार आय रू0 सबसे अधिक रजाणु गांव की है । (15000)

बैनक्सा

यह एक प्रकार का अल्पकालिक पौधा है इस पौधे में बसंत पंचमी के आरम्भ में सफेद पुष्प खिलने लगते है। यह एक सुलभ पुष्प पौधा है, जो शीतोष्ण जलवायु वाले भौगोलिक क्षेत्र अधिक मात्रा में पाये जाते है। इसका औषधि के रूप में उपयोग किया जाता है। और ग्रामीण क्षेत्र में इसका स्वाद चाय के साथ भी लिया जाता है। इसे चाय में डालने से चाय सुगन्धित हो जाती है। साथ ही यह व्यापार अथवा व्यवसाय के दृष्टिकोण भी उपयोगी है। हालांकि इसका प्रति सूक्ष्म होने कारण व्यापार करना सरल कार्य नहीं है क्योंकि इसका वन व पुष्प के छोटे होने से अधिक मात्रा मे इकट्ठा करना सम्भव नहीं है।

सारणी–6
बैनक्सा के व्यवसाय में सगंलन लोग

गांव	सदस्यों की संख्या		कुल योग	आय के रूप में	प्रतिशत
	हाँ	नही			
रजाणु	08	02	10	6000	
कोरवा	06	04	10	2000	
हटाल	06	04	10	2000	
बुल्लहाड	07	03	10	4000	

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है, कि सबसे ज्यादा बैनक्सा का व्यवसाय रजाणु गांव में 10 परिवार मे से 8 परिवार बैनक्सा का व्यवसाय करते है। कोरूवा व अटाल 10 में 6 परिवार बैनक्सा का व्यवसाय करते है तथा बुल्लहाड मे 10 मे से 7 परिवार बैनक्सा का व्यवसाय करते है। प्रति वर्ष प्रति परिवार आय रू0 सबसे अधिक रजाणु गांव की है ।(6000)

सुझाव

1. जौनसार– बावर का मध्यवर्ती भू–भाग लोखण्डी सब डिविजन के अन्तर्गत भूपला, देववन, मुधेर, खडम्बा आदि वन क्षेत्र मे प्राकृतिक सम्पदा की दृष्टि अत्यन्त महत्पूर्ण है। यंहा पर वनौषधि के बहुतायत में उपलब्ध है परन्तु इस क्षेत्र में सरकार या अन्य संस्थाओं ने इस ओर ध्यान नही दिया।
2. हिमालय के निवासियों के जीवन मे सम्बन्धित वन वृक्षों का निरूपण तथा उनका आर्थिक व सामाजिक महत्व।
3. क्षेत्र के प्राकृहितक संसाधनो का आर्थिक उपयोग करना होा तथा जनमानस के जागृत कर व्यवसाय के स्वरूप अपनाना होगा।
4. नौजवान शिक्षित वर्ग को कैश क्रॉप (नगदी फसल) व्यवसाय एंव पर्यटन, शिक्षा , व्यापार कुटीर उद्योग धन्धों को रोजगार हेतु प्रोत्साहित करना होगा।
5. समाज की गरीमा बनाये रखने अपनी संस्कृति एंव परम्पराओं को सुरक्षित रखना होगा

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि अध्ययन क्षेत्र जौनसार–बाबर जनजातिय समुदाय खाद्यान व आर्थिक सुरक्षा, कृषि व्यवसाय नगदी फसलें मानसूनी वर्षा पर निर्भर है। जलवायु परिवर्तन के कारण वर्षा सही समय पर न होने के कारण इनकी परम्परागत आजिविका एवम् पर्वतीय परिस्थितिक तंत्र में सुक्ष्म औषधीय पौधे जैव विविधता मे कमी आ रही है!

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

राणा जयपाल, 2004 जौनसार बावर दर्शन कनाट प्लेस देहरादून।

एडकिन्सन, एडविन्न टी0 1998 हिमालय गजेटियर, उतरायण प्रकाशन हिमालय संचेतना आदि बदरी, चमोली सरस्वती प्रेस

शाहा टीकाराम, 2016 जौनसारः–बाबर समाज संस्कृति और इतिहास बिनसर पब्लिकेशन देहरादून

प्रसाद गायत्री (2000) सांस्कृतिक भूगोल, शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद

जैन, शशी (1981), ग्रामीण समाज शास्त्र रिसर्च पब्लिकेशन नई दिल्ली।

जोशी हेमलता, भगोरा आर, एल, (2000) जनजातियों का भौगोलिक अध्ययन, यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा0 लि0 जयपुर।

गुप्ता, एम0एल0डी0डी0 शर्मा (1990) भारतीय ग्रामीण समाज शास्त्र; साहित्यभवन, आगरा, '

कौशिक, एस0 डी0 (1968) मानव भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ

नौटियाल, शिवानन्द(1991) उत्तराखण्ड की जनजातिया सुलभ प्रकाशन नई दिल्ली

शर्मा, वी0डी0 1979 आदिवासी विकास एक सैद्धान्तिक विवेचना।